"मुक्ति पर्व दिवस गीत"

है मिशन मेरा मानवता का, ये सबको प्यार सिखाता है,
है एक प्रभु के बालक सब, इस एक से सबका नाता है,
है मिशन मेरा . . . . . .

पेशावर में बूटा सिंह ने, ये ज्ञान का बूटा लगाया था,
बडे प्यार से इसको सींचा था, बडे जतन से इसे सजाया था,
उनके चरणों में जिज्ञासु, अवतार सिंह भी आया था,
अपनी सेवा और भक्ति से, जिसने सद्गुरू को रिझाया था,
बन कर सद्गुरू अवतार सिंह – २
फिर जन जन, फिर जन जन का कल्याण किया
दिल्ली आकर शहनशाह ने, फिर मंडल का निर्माण किया
है मिशन मेरा . . . . . .

जगतमाँ और शहनशाह ने, इस मिशन को फिर विस्तार दिया,
दी ममता स्नेह दिया अपना, इतना सुन्दर परीवार दिया,
इस देश के कोने कोने में, सच्चाई का प्रचार कीया,
दिये सात सितारे, सेवादल, और भवनों का संचार कीया,
फिर गुरूबचन को सौंप के सब – २
शहनशाह का, शहनशाह का ये कमाल हुआ,
गुरूसिख, सद्गुरू, फिर से गुरूसिख, युगपुरूष ये बेमिसाल हुआ,
है मिशन मेरा . . . . . .

दुनिया के कोने कोने में, सच्चाई का पैगाम दिया,
नशाबन्दी, सादा शादी, युथ फोरम को अंजाम दिया,
कर्मों पे जोर दिया हमको, मिशन ये कर्म प्रधान दिया,
जीता नफरत को प्यार से और, इस मिशन को ये मुक्काम दिया,
देकर कुरबानी गुरूबचन – २
मिशन को, मिशन को अमर बनाया है,
मानवता के मसिहा ने, मानवता को महकाया है,
है मिशन मेरा . . . . . .

जब थामी मिशन की बागडोर, आतंक के बादल थे छाये,
हिंसा का जोर था चारों और, और बिलख रही थी अबलायें,
मानवता का था कत्ल हुआ, और मानव सारे घबराये,
बदले की आग में सुलग रहे थे, बच्चे बुढे और मायें,
बहे खुन नाडीयों में सबके – २
सडको पे, सडको पे बहाया ना जाये,
सन्देश शान्ती प्रेम का ले, हरदेव सद्गुरू तब आये,
है मिशन मेरा . . . . . .

भक्ती के नभ पे चमक रहे, ऋषि व्यास देव इक तारे है,
पांडुरंग, जवाहर, उमाकांत, महाराष्ट्र के ये सितारे है,
प्रधान लाभ, महादेव, अमर सिंह, ऋषि कमल जी प्यारे हैं,
भाई रामचंद, बेकल, साकी, युँ नाम तो कितने सारे है,
ये मिशन है दिलवर संतों का – २
ऋषियों का, ऋषियों का सेवादारों का,
तन मन धन अर्पित कर डाला, ऐसे सद्गुरू के प्यारों का,
है मिशन मेरा . . . . . .

(तर्ज : है प्रीत जहाँ की रीत सदा . . . . .)